इन्द्र बहादुर सिंह इन्द्रेश

जन्म तिथि: 24.12.1954
जन्म स्थान: मोहम्मदमऊ
पिता: श्री शीतला बक्श सिंह भदौरिया
माता : स्व0 श्रीमती इश्वरी देवी
मोबाइल नं. 9455850858

अपनी-अपनी सोच है, अपना राग-विराग।
कोई शीतल चाँदनी, कोई तपती आग।।
कोई तपती आग, जलाकर रख देती है।
कोई बनकर चन्द्र, सभी दुख हर लेती है।
कह कविवर इन्द्रेश, नहीं है कोई नपनी।
सब किस्मत का खेल,बुद्धि है अपनी-अपनी।।

****

आये पति घर लौटकर, दीजै उसका ध्यान।
प्रेम सुधा बरसाइये, आधी मिटे थकान।।
आधी मिटे थकान, धीर कुछ मन में धरिये।
ला मुख पर मुस्कान, प्रेम से बातें करिये।
कह कविवर इन्द्रेश, तभी सुन्दरता भाये।
मन भी सुन्दर होय, सदन धन-वैभव आये।।

****

आशुतोष हैं आप प्रभु, नौका खेवनहार।
दानी-वरदानी महा, विनवहुँ बारम्बार।।
विनवहुँ बारम्बार, करो प्रभु रक्षा मेरी।
दुख से लेउ उबारि, शरण मैं आया तेरी।
कह कविवर इन्द्रेश, दास में बहुत दोष हैं।
पल में देउ नशाय, आप तो आशुतोष हैं।।

****

आशा के अनुरूप जब काम करें नहिं पूत।
मातु पिता भी क्या करें, सम्पति भरी अकूत।।
सम्पति भरी अकूत, नष्ट सब होते देखा।
दगा भी देगा सगा, करे क्या किस्मत-रेखा।
कह कविवर इन्द्रेश, चतुर्दिक दिखे निराशा।
गलत करो यदि कार्य छोड़ दीजै शुभ आशा।।

****

जिसके जीवन में सदा, सर्वोपरि है काम।
ऐसे कर्मठ श्रमिक को, बारम्बार प्रणाम।।
बारम्बार प्रणाम, आप सब भाग्यविधाता।
जानें तीन न पाँच, कर्म से केवल नाता।
कह कविवर इन्द्रेश, भरोसे हैं सब उसके।
देते हम सम्मान, कर्म पूजित हैं जिसके।।

****

ऐसे भी कुछ लोग हैं, ऐसा मिला नसीब ।
धन के बहुत अमीर हैं, मन के बहुत गरीब।।
मन के बहुत गरीब, रात दिन चौन न पाते।
कर पैसे से प्यार, दौड़ दिन-रात लगाते।
कह कविवर इन्द्रेश, मक्खीचूस हैं कैसे।
नहिं इज्जत-ईमान, फेर पैसे के ऐसे।।

****

करते जो नर साधना, धेय निष्ठ निष्काम।
पाते अपने लक्ष्य को, जग में होता नाम।।
जग में होता नाम, सभी से आदर पाते।
थोड़े से श्रम माँहिं, सभी कारज बन जाते।
कह कविवर इन्द्रेश, देव सम धरा विचरते।
दुनिया हाथों लेत, काम जो अच्छे करते।।

****

माया को सब जानते, ठगती बारम्बार।
लेकिन लालच है बुरा, फँस जाते हरबार।।
फँस जाते हरबार,काम क्या-क्या कर जाते।
निकले कइयों बार,किन्तु फिरभी फंस जाते।
कह कविवर इन्द्रेश, जहाँ अपना गुण गाया।
जाते सब कुछ भूल, है अच्छी लगती माया।।

****

मारो बेटी गर्भ में, बहुत बुरी है बात।
बेटी घर की लक्ष्मी, समझ लीजिए तात।।
समझ लीजिए तात, सृष्टि है हमें बचाना।
बेटी दीन्हा मार, पड़ेगा फिर पछताना।
कह कविवर इन्द्रेश, जरा मन माँहि विचारो।
बेटी जग का सार, बन्धु बेटी मत मारो।।

****

मूल से प्यारा ब्याज है, कहते हैं सब लोग।
प्यारा मुझे सुपौत्र है यह भी है संयोग।।
यह भी अति संयोग बहुत ही होनहार है।
सद्बुद्धी सुचि नेक सभी से सरोकार है।
कह कविवर इन्द्रेश न गल्ती करे भूल से।
सही कहें सबलोग, ब्याज प्रिय होत मूल से।।

****